कक्षा - VII

पाठ्यपुस्तक – वसंत भाग - 2

पाठ - 8

शाम एक किसान

कवि - सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

- (PPT-1)

कविता का सारांश

इस कविता में जाड़े की शाम के प्राकृतिक दृश्य का चित्रण किसान के रूप में किया गया है । इस दृश्य में पहाड़ एक बैठे किसान की तरह दिखाई दे रहा है, जिसके सिर पर आकाश रूपी साफ़ा बँधा हुआ है । **- (PPT-2)**

पहाड़ के नीचे बहती हुई नदी घुटनों पर रखी चादर-सी प्रतीत होती है । पलाश के पेड़ों पर खिले लाल फूल जलती अँगीठी सरीखी है । पूरब क्षितिज पर घना होता अंधकार झुंड में बैठी भेड़ों जैसा दिखता है और पश्चिम दिशा में डूबता सूरज चिलम पर सुलगती आग की भाँति दिख रहा है । पूरा दृश्य शांत है । **- (PPT-3)**

अचानक मोर बोलता है । मानो, किसी ने आवाज़ लगाई - 'सुनते हो' । इसके बाद के दृश्य का वर्णन घटना के रूप में किया गया है । उस घटना में चिलम उलट जाती है, आग बुझ जाती है, धुआँ उठने लगता है, सूरज डूब जाता है, शाम ढल जाती है और रात का अँधेरा छा जाता है । **- (PPT-4)**

पद्यांश की व्याख्या

आकाश का साफ़ा बाँधकर
सूरज की चिलम खींचता
बैठा है पहाड़,
घुटनों पर पड़ी है नदी चादर - सी,
पास ही दहक रही है
पलाश के जंगल की अँगीठी

अँधकार दूर पूर्व में
सिमटा बैठा है भेड़ों के गल्ले - सा । **- (PPT-5)**

शब्दार्थ - **साफ़ा** = सिर पर बाँधने का वस्त्र । **चिलम** = जिसमें तम्बाकू रखकर आग भरते हैं । **दहक** = सुलग-सुलग कर जलना । **पलाश** = लाल रंग के फूल । **अँगीठी** = जिसमें आग जलाई जाती है । **सिमटा** = इकट्ठा होकर । **गल्ले** - झुंड । **- (PPT-6)**

सन्दर्भ - प्रस्तुत काव्यांश 'वसंत भाग-2' पाठ्य पुस्तक में संकलित कविता 'शाम एक किसान' से लिया गया है । इसके रचयिता सर्वेश्वरदयाल सक्सेना हैं । **- (PPT-7)**

व्याख्या -

शाम के समय सूर्य की लालिमा आकाश में फैल जाती है और पर्वत के शीर्ष को छूती प्रतीत होती है । इस दृश्य का वर्णन करने हेतु कवि ने पर्वत को किसान के रूप में चित्रित किया है, जिसके सिर पर आकाश रूपी साफ़ा बँधा हुआ है । वह सूरज की चिलम से कश खीच रहा है । घुटना मोड़कर बैठे किसान के पैरों पर नदी की चादर पड़ी है । उसके सामने पलाश के लाल-लाल फूलों की अँगीठी जल रही है । दूर पूरब दिशा में क्षितिज से उठता अँधेरा बैठे हुए भेड़ों का समूह जैसा लग रहा है । **- (PPT-8)**

विशेष -

- ❖ प्रस्तुत कविता में मानवीकरण, रूपक तथा उपमा अलंकारों का प्रयोग किया गया है ।
    - **मानवीकरण अलंकार का लक्षण व उदाहरण -** जहाँ जड़ प्रकृति पर मानवीय भावनाओं तथा क्रियाओं का आरोप हो, वहाँ मानवीकरण अलंकार होता है । प्रस्तुत कविता में पहाड़ का किसान के रूप में चित्रण कर कवि ने बहुत ही सुंदर मानवीकरण का प्रयोग किया है ।

रूपक अलंकार का लक्षण व उदाहरण - जहाँ गुण की अत्यंत समानता के कारण उपमेय में ही उपमान का अभेद आरोप कर दिया गया हो, वहाँ रूपक अलंकार होता है । जिसका वर्णन हो रहा है, उसे 'उपमेय' कहते हैं और जिससे 'उपमेय' की तुलना की जाए, वह 'उपमान' कहलाता है । जैसे - **'आकाश का साफ़ा** बाँधकर', **'सूरज की चिलम** खींचता' 'बैठा है **पहाड़'** । इन उदाहरणों में

रूपक का प्रयोग किया गया है । यहाँ आकाश को साफ़ा के रूप में, सूरज को चिलम के रूप में और पहाड़ को किसान के रूप में दिखाया गया है । **- (PPT-9)**

- **उपमा अलंकार का लक्षण व उदाहरण** - जहाँ एक वस्तु या प्राणी की तुलना दूसरी प्रसिद्ध वस्तु या प्राणी से की जाती है, वहाँ उपमा अलंकार होता है । जैसे - घुटनों पर पड़ी है **'नदी चादर - सी'**, सिमटा बैठा है **'भेड़ों के गल्ले - सा'** । यहाँ पर नदी की तुलना चादर से तथा अंधकार की तुलना 'भेड़ों की गल्ले' अर्थात् झुंड से की गई है । इसका भाव यह है - जिस प्रकार भेड़ों के झुंड में भेड़ें एक-दूसरे से सटकर इकट्ठी बैठती हैं, वैसे ही अंधकार भी बराबर रूपों में चारों ओर फैल गया । **- (PPT-10)**

अगले ही क्षण यह सारा दृश्य घटना में बदल जाता है । इसको स्पष्ट करते हुए कवि ने आगे लिखा है -

दूसरा पद्यांश

अचानक बोला मोर ।
जैसे किसी ने आवाज़ दी -
'सुनते हो' ।
चिलम औंधी
धुआँ उठा -
सूरज डूबा
अँधेरा छा गया ।

- (PPT-11)

शब्दार्थ - औंधी = उल्टी । डूबा = अस्त ।

प्रसंग - प्रस्तुत पद्यांश में मोर के बोलते ही दृश्य बदल जाने का चित्रण है ।

- **व्याख्या** - कवि ने इस सुंदर प्राकृतिक दृश्य को घटना के रूप में चित्रित किया है । पर्वतीय प्रदेश में शाम घिरती जा रही थी तभी मोर की आवाज़ सुन ऐसा लगा मानो किसी ने पहाड़ रूपी बैठे किसान को पुकारा - 'सुनते हो' । इस आवाज़ से किसान हड़बड़ाकर उठ खड़ा हुआ । इस हड़बड़ी में उसकी चिलम उलट गई । चिलम उलटने

से धुआँ उठा । उधर पहाड़ के पीछे सूरज डूब गया और चारों ओर अंधकार छा गया अर्थात् रात हो गई । **- (PPT-12)**

विशेष -

- पद्यांश में शाम के रात में बदलने का दृश्य अतिमनमोहक है ।
- 'अचानक बोला मोर । जैसे किसी ने आवाज़ दी ।' - इन दो पंक्तियों में उपमा अलंकार का प्रयोग किया गया है ।
    - पूरी कविता का वर्णन मानवीकरण के रूप में किया गया है । **- (PPT-13)**
    - **निष्कर्ष** - प्रस्तुत कविता में जाड़े की शाम का दृश्य अति मनमोहक है । पर्वत एकदम शांत दिखाई देता है, आकाश पर सूर्य की लालिमा फैली है । पहाड़ के नीचे नदी बह रही है, पलाश के लाल फूल अपनी सुंदरता विखेर रहे हैं, पूरब की ओर अंधकार छाने लगा है व पश्चिम में ढलता सूरज अपनी छटा बिखेर रहा है ।
      - (PPT-14)